International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493; Impact Factor: RJIF 5.46
Received: 02-01-2021; Accepted: 22-01-2021; Published: 24-02-2021
Volume 3; Issue 1; 2021; Page No. 16-17

हिन्दी निबंध साहित्य में जयनाथ नलिन का अवदान

रीना रानी
सहायक प्रोफेसर, आई0 बी0 कॉलेज, पानीपत, हरियाणा, भारत

सारांश
डॉ. जयनाथ नलिन का हिन्दी साहित्य में सुधी निबंधकार, सशक्त एकांकीकार, सफल कहानीकार, गंभीर समीक्षक, कुशल संपादक, प्रखर व्यंग्यकार के रूप में अत्यधिक योगदान मिलता है। ये छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, प्रपद्यवाद, नई कविता और अनेक वाद के दौर से गुजरे है। इनकी मेहनत व अथक संघर्ष के द्वारा साहित्यिक वृक्षों से मधुर फल प्राप्त होते है। इनके व्यक्तित्व में सफल साहित्यकार के सभी गुण दिखाई देते है। इन्होंने अपनी लेखनी से माध्यम से साहित्य की विविध विधाओं में भी वृद्धि की है। इनकी लेखनी के द्वारा हिन्दी जगत के लिए विपुल मात्रा में साहित्य की सर्जना हुई।

मुख्य शब्दः हिन्दी साहित्य में सुधी निबंधकार, सशक्त एकांकीकार, सफल कहानीकार, गंभीर समीक्षक, कुशल संपादक

प्रस्तावना

मानव अपने आन्तरिक उद्वेलन के प्रकटीकरण हेतु भाषा का सहारा लेता है। इस भाषा के कारण साहित्यकार अपनी सामाजिक अनुभुतियों को अपनी रचना का पाथय बनाता है। साहित्य में जिसकी अभिव्यक्ति गद्य और पद्य दो रूपों में होती है। कहानी, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र गद्य साहित्य की विभिन्न शाखाएँ अस्तित्व में आयी। 'निबंध लेखन भी गद्य साहित्य की एक सशक्त अभिव्यक्ति है।

निबंध का शाब्दिक अर्थ है . 'गठा हुआ, कसा हुआ, बंधनमुक्त।[1]

निबंध मूलतः संस्कृत, साहित्य का शब्द है, जिसकी व्याख्या में कहा गया है षनिबंधातीति निबंध ष्धात्वर्थ की दृष्टि से निम्नांकित दो व्युत्पतियाँ इसके प्राचीन रूप और अर्थ को स्पष्ट करने में सहायक हो सकती है – (अ) 'नि+बंध+ल्युट (निबंध्यते तेनास्मिन वा) अर्थात् वह निबंध है, जिसमें विचारों का निबन्धन हो।

निकर बोकर जी निबंध के विषय में कहते है, श्आत्मतत्व इसका विधायक अंग है। निबंध केवल विचार तत्व को प्रेषित करता है और प्रत्यक्ष रूप में हमारी ज्ञान–पिपासा को शान्त करता है।"[2]

पाश्चात्य जगत के विद्वानों की निबंध संबंधी परिभाषाओं का अवलोकन करने के पश्चात् भारतीय विद्वानों की परिभाषाओं का साक्षात्कार करना अत्यंत आवश्यक है – बाबू गुलाबराय के अनुसार, श्निबंध उस गद्य रचना को कहते हैय जिसमें एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन निजीपन, स्वच्छदता, सौष्ठव और संजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बद्धता के साथ किया गया हो।"[3]

डॉ. जयनाथ 'नलिन' बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है। अपने गंभीर चिन्तन को चित्रित करने के लिए उन्हें निबंध विधा को विशिष्ट तौर पर अंगीकार किया है। इसके निबंध साहित्य में दर्शन, कला, साहित्य, समाज, राजनीति, मनोविज्ञान आदि विषयों पर गंभीर विचार प्रकट किए गए हैं। - "जो अवतारी पुरूष को अतीत, वर्तमान और भावी को खापों में नहीं देखते, एक निरन्तर अखण्ड गतिशीलता मानते हैं, उनके लिए पूरा समय अखण्ड वर्तमान है। उनके कर्मों और सिद्धियों को समय नहीं कुचलेगा, वह तो उप पर पहरा देगा।" [4]

जब किसी मनुष्य का स्वर्णिम काल चल रहा होता है, तो उसे अपने से हीन, दरिद्र, साधनहीन, असहाय व्यक्ति का उपहास नहीं उड़ाना चाहिए, क्योंकि यह जीवन क्षणभंगुर है और यहां कुछ भी स्थायी नहीं है। निबंध 'काल' में काल का रूप द्रष्टव्य है . श्एक राज्य के मुख्यमंत्री को। वर्तमान की अनुकम्पा से वह कितने कष्टों की खुशामदों की भीड़ में खेलता था और आज वह समय की वक्रदृष्टि के एक बारीक से संकेत पर किसी की शुभकामना और अभिवादन का भी अधिकारी नहीं । इतना उपेक्षित और नगण्य।"[5]

नलिन जी ने काल को महाकाल शिव की शक्ति के रूप में वर्णित किया है । इस जीवन में जीवन – मरण, सुख–दुख, हर्ष–विवाद, यश–अपयश व पाप–पुण्य सभी कुछ परमसत्ता के अधीन है। कब मनुष्य का सौभाग्य प्रारंभ हो जाए या फिर दुर्भाग्य? यह सब मनुष्य के अधिकार क्षेत्र से बाहर है। इस संसार में यदि कोई परम शक्तिशाली है तो वह काल है – "परिवर्तन, क्रान्ति, विप्लव और वैभव, समृद्धि, शान्ति महाकाल की पलकों की तनिक – सी रोश वक्रता और क्षीण – सी मुस्कान – किरण के परिणाम हैं। दुष्काल, अकाल, दुर्भाग्य, मरण, सौभाग्य, सुकाल सब काल के विविध रूप है" ।[6]

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है । शारीरिक संरचना व बौद्धिक कौशल के कारण वह अन्य प्राणियों से भिन्न है। उसके विवेकशील बने रहने के लिए मस्तिष्क और हृदय उसका सहयोग करते हैं। यदि किसी मनुष्य पर श्रद्धा और प्रेम दिखाया जाए तो वह भक्ति कहलाता है और श्रद्धा के साथ विश्वास का मिश्रण किया जाए तो वह आस्था कहलाती है। निबंध 'आस्था – अनास्था' में नलिन जी का विश्वास और श्रद्धा पर चिंतन इस प्रकार है – "श्रद्धा और प्रेम का योग है भक्ति, विश्वास और श्रद्धा का योग आस्था । आस्था के स्वरूप – ग्रहण या आकार – प्रतिष्ठा में चिन्तन का अनुपात श्रद्धा से अधिक रहता है । किसी सिद्धान्त या तथ्य को सत्य मान लेने में मस्तिष्क का निर्णय और स्वीकृति अंतिम है।"[7]

आस्थावान व्यक्ति लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रतिबद्ध होता है । उसे रास्ते के कांटे विघ्न के रूप में प्रतीत नहीं होते अपितु उसमें विषम परिस्थितयों के लिए आशावाद की ऊर्जा कूट – कूट कर भरी होती है। वह विघ्न और बाधाओं को हँसते – हँसते झेल जाता है । निबंध 'आस्था – अनास्था' में आस्थावान व्यक्ति को सच्चा कर्म – पंथी

बताया है यथा "आस्थावान कर्म – पंथी के लिए विघ्न प्रलोभन बनते हैं और अड़ी बाधाएँ मुस्काती सिद्धियाँ नजर आती है। वह बुझे मन, ढले तन और ढीले चरण से इरादों की बेगार नहीं ढोता, बल्कि मंजिल की दूरियों को पूरा करते हुए पग – पग पर उल्लास – उत्सव मनाता, सफर की मशाल में नये इरादों का तेल उड़ेलता।"[8]

मनुष्य स्वभाव से सौन्दर्य के प्रति आसक्त व उपासक है। सौन्दर्य बोध की अनुभूति उसे गद्–गद् कर देती है। सौन्दर्य बोध को हम दो रूपों में समझ सकते है। एक तो सौन्दर्य को समझने वाला विवेक तथा दूसरा सौन्दर्य को भोगने वाली उद्दाय इच्छा। सौन्दर्य भोग की कामना मनुष्य का जीवन नष्ट भी कर सकती है। यह एक प्रकार असाध्य रोग के समान हमारे समक्ष प्रस्तुत होती है। नलिन जी के निबंध ष्सौन्दर्य बोधष में सुन्दर – असुन्दरता पर दृष्टिपात हुआ है – "सौन्दर्य–भोग – वृत्ति जब लिप्सा का उत्कट या निरंकुश रूप धारण करती है, तब मनुष्य अत्यंत विलासी बन जाता है। इन्द्रिय–सुख–भोग में वह ऐसा डूबता है कि उभर नहीं पाता । विलास की ऐसी उद्दाम और दमनातीत भूख भड़क उठने पर, सौन्दर्य–बोध सद्वृति और उल्लास – अनुभूति का साधन न रहकर असाध्य रोग बन जाता है।"[9]

हमारे पूर्वज जंगलो में रहते थे। वहीं उनको सौन्दर्य का ज्ञान प्राप्त हुआ। सौन्दर्य के प्रति विवेक वही जागृत हुआ। वहीं उन्हें पेड़–पौधो के प्राप्त सामग्री व पक्षियों के पंखों के रूप में अनेक अच्छे चुनाव मिलते थे। उनका सौन्दर्य विवेक चयन में उनकी सहायता करता था । "जंगली जीवन में मानव अपने सौन्दर्य – बोध की परख और सौन्दर्य – भोग की तृप्ति प्रकृति के विशाल भण्डार से प्रिय लगने वाली वस्तुएँ उसकी आँखे आप ही चुन लेती हैं।"[10]

यह सत्य है कि मुनष्य अहं भाव से परिचालित होता है। वह इस भावना के रहते स्वयं को इस लोक में श्रेष्ठ समझता है। इस भावना को ठेस पहुँचने पर वह तिलमिला उठता है। वह सामने वाले को विभिन्न प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष तरीकों से अपनी नाराज़गी प्रदर्शित करता है। नलिन जी के निबंध 'कलाकार का अहं' में मानव के यह भाव द्रष्टव्य है – "सिनेमा जाने के लिये सास–ससुर की आज्ञा न मिलने पर नववधू का अहं भी घायल हो जाता है। वह भी मौन धारण कर कोप–कमरे में जा लेटती है। जब पति मियां आते हैं, तो वह सिसकियाँ भर–भर मुँह फुलाकर व्यथा–निवेदन और मान–प्रदर्शन करती है।"[11]

एक कलाकार कठोर परिश्रम व अभ्यास के द्वारा ही अच्छा मान–सम्मान प्राप्त करता है। यदि वह अप्राप्त उपलब्धियों का झूठा प्रचार करेगा तो पोल खुलने पर वह सम्मान न प्राप्त कर सकेगा । 'कलाकार का अहं' में यह सत्य उद्घाटित हुआ है – "सच्चे कलाकार का अहं किसी को तुच्छ समझ खोखले अभिमान – प्रदर्शन या अप्राप्त उपलब्धियों का ढोल पीटने में नहीं, साधना की कठोरता, दुस्तरता, जीवन की कटुता और अभावों को पीकर सिद्ध–पद पाने में है।"[12]

जड़ता किसी भी समाज के लिए धुन सदृश है । वह समाज की गति को रूग्णता प्रदान करती है । यदि वहाँ नई चेतना का समावेश न हो तो वह समाज के लिए अहितकारी साबित होती है। निःसंदेह जड़ता का विरोध कर नवीनता को अपनाने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए। "विद्रोही वर्तमान की निरंकुशताओं और अवरूद्धताओं को अपने कर्मों के पोस जीवन का पथ प्रशस्त करते हैं। वर्तमान की छाती पर जमीं शिलाओं को पिघलाकर उसकी साँसो को स्वाधीन करते हैं। वे जड़ संस्कारों की होली जलाकर दीवाली मनाते हैं।"[13]

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते है कि जयनाथ 'नलिनं' हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। निबंध के क्षेत्र में योगदान तो इन्हें आचार्य रामचंद्र शुक्ल की परंपरा में ला खड़ा करता है। इनके निबंधो में हृदय व बुद्धि का संतुलित समन्वय है। इन्होंने विचारात्मक निबंधो को अधिक प्राथमिकता दी है। इसके साथ – साथ भावात्मक, हास्य – व्यंग्यात्मक व ललित निबंधों को भी पर्याप्त मात्रा में स्थान दिया है । इसका अभिव्यंजना कौशल असाधारण है। इसका भावागत व शिल्पगत सौन्दर्य अनूठा है । इनके निबंधो का अवलोकन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि निबंध विधा के क्षेत्र में इनका योगदान अविस्मरणीय है।

संदर्भ सूची

1. बाबूराम, निबंधकार वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ01
2. दर्शन सिंह, ललित निबंधकार : विवेकराय, पृ034
3. दर्शन सिंह, ललित निबंधकार : विवेकराय, पृ033
4. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 06
5. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 07
6. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 09
7. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 10
8. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 18
9. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 22
10. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 25
11. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 33
12. जयनाथ नलिन चिन्तन और कला पृ0 37